रात्रिक्लास 21.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ऊँच ते ऊँच है एक भगवान। माना फादर। किसका फादर? सभी जीवात्माएं जो हैं उन सभी का। जो भी मनुष्य मात्र है उनमें जो आत्मा है उनका है फादर। अभी जो सभी आत्माएं पार्ट बजाती हैं वह पुनर्जन्म ज़रूर लेती हैं। कोई बहुत, कोई थोड़े। कोई 84 पुनर्जन्म लेते हैं, कोई 80, कोई 60 । देहधारी जो भी मनुष्य हैं, भल यह ल.ना. विश्व पर राज्य करने वाले हैं। उस समय न्यू वर्ल्ड में और कोई डिनायस्टी नहीं होती है। जो भी देहधारी मनुष्य हैं कोई भी सद्गति दे न सके। पहले–2 है स्वीट सायलेन्स होम। सभी आत्माओं का घर। बाप भी वहां ही रहते हैं। इसको निराकारी दुनियां कहा जाता है। बाप ऊँच ते ऊँच, तो रहने का स्थान भी ऊँच ते ऊँच है। बाप कहते हैं मैं ऊँच ते ऊँच हूँ। मुझे भी आना पड़ता है। सभी पुकराते हैं। जो मनुष्य मात्र हैं पुनर्जन्म ज़रूर लेना है। सिर्फ एक बाप ही नहीं लेते हैं। पुनर्जन्म तो सभी को लेना ही है। कोई भी धर्म स्थापक हो। बुध अवतार कहते हैं ना। बाप के भी अवतार कहते हैं। उनको भी आना पड़ता है। अभी सभी जीवात्माएं यहां मौजूद हैं। वापस कोई भी जा नहीं सकते हैं। पुनर्जन्म लेते हैं तब तो वृद्धि होती है ना। पुनर्जन्म लेते इस समय सभी तमोप्रधान हैं। बाप ही आकर नॉलेज देते हैं। बाप ही नॉलेजफुल है। आदि, मध्य, अंत का नॉलेज उनमें ही है। उनको ही नॉलेजफुल पिलीश(ब्लिस) फुल कहा जाता है। एवर प्योर। बाकी मनुष्य मात्र प्योर ,इम्प्योर बनते हैं। यह ल.ना. डीटी डिनायस्टी के फर्स्ट हैं। इनको ही पूरे 84 जन्म लेनी पड़ती है। पुनर्जन्म यहां ही लेते हैं और फिर अंत में बाप आकर सभी को पवित्र बनाकर ले जाते हैं। बाप को ही लिबरेटर कहा जाता है। इस समय सभी धर्म स्थापक यहां हाज़िर हैं। बाकी थोड़े हैं तो आते रहते हैं। वृद्धि होती रहती है। सर्व की सद्गति दाता एक ही बाप है। शान्तिधाम वा सुखधाम के मालिक बनाते हैं। तुम ही पूरे 84 जन्म लेते हो। तुम जो पहले आये थे वही फिर पहले आवेंगे। क्राइस्ट फिर अपने समय पर आवेगा। क्राइस्ट में इतनी ताकत नहीं जो किसको भी वापस ले जाये। वापस ले जाने की ताकत एक ही बाप में है। इस समय है रावण राज्य। डेविल राज्य। पुकारते भी हैं ओ यु डेविल। डीटी डेविल बन जाते। डेविल फिर डीटी बनते हैं। 84 जन्मों के विकार पूरे प्रवेश कर लेते हैं। बाप कहते हैं तुम डीटी दुनिया के मालिक थे। फिर रावण राज्य में तुम विकारी बन पड़े हो। पुनर्जन्म तो सभी को ज़रूर लेना ही पड़ता है। धर्म स्थापन कर वापस चला जाये यह हो नहीं सकता। उनको पालना ज़रूर करनी है। गाया जाता है ब्रह्मा द्वारा नई दुनियां की स्थापना। पुरानी दुनियां का विनाश। नई दुनियां में एक धर्म एक ही डिनायस्टी थी। अभी वह है नहीं। सिर्फ चित्र है और सभी धर्म मौजूद हैं। सिवाय एक गॉडफादर के जो भी मनुष्य मात्र देहधारी हैं पुनर्जन्म ज़रूर लेते हैं। भारत है अविनाशी खण्ड। यह कब विनाश नहीं होता। अनादि ,अविनाशी है। जब इनका राज्य था तो और कोई खण्ड था नहीं। सिर्फ इनका ही राज्य था। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी। बस। और कोई नहीं। नई दुनियां स्वर्ग डिटी वर्ल्ड कहा जाता है। निराकारी दुनियां को स्वर्ग नहीं कहा जाता। वह है स्वीट सायलेन्स होम निर्वाणधाम। आत्मा का ज्ञान सिवाय बाप के कोई दे न सके। आत्मा बहुत छोटी बिन्दी है। सभी आत्माओं का फादर है सुप्रीम सोल। उनको सुप्रीम फादर कहा जाता है। वह कब पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। इस समय नाटक के पिछाड़ी है। यह सारी वर्ल्ड स्टेज है। इसमें खुल चला रहा है। इनकी डेक्युरेशन है 5000 हज़ार वर्ष का। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। जबकि बाप आकर सभी को उत्तम ले उत्तम बनाते हैं। आत्मा अविनाशी है। बना बनाया खेल है। जो पास्ट हो गये वह उसी समय पर आवेंगे। पहले–2 यह आये थे ल.ना.। अभी नहीं हैं। सच्चा सत का संग यह है। बाकी तो हैं झूठे संग। लतसंग। अर्थात् एक दो लात मारते हैं सीढ़ी नीचे गिरने लिए। चढ़ नहीं सकते हैं। यह है ही दोजक; परन्तु यह भी कोई समझते थोड़े ही हैं कि दोजक में हैं। बहिस्त से सभी दोजक में गिरे हैं। फिर बाप आकर सभी को ले जाते हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार ,गुडनाइट और नमस्ते।